भक्तिकाल में कबीर की भूमिका

भारत में भक्ति काल की समयसीमा 1375 विक्रम संवत से लेकर 1700 विक्रम संवत तक माना गया है। भक्ति काल का प्रारंभ भारतवर्ष में मुसलमानों के आगमन के बाद हुआ है। इस काल के साधु समाज में एक दोहा प्रचलित है जिसके अनुसार से भक्ति का विकास पूरे भारतवर्ष में हुआ है।

''भक्ति द्रविड़ उपजी लाये रामानंद।

प्रकट करि कबीर ने, सातद्वीप नौखंड।।''

भक्ति आंदोलन के संबंध में एक आध्यात्मिक अनुसंधान है, जिसके माध्यम से मनुष्य आदि शक्ति के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है। विश्व के सभी धर्मों का मुख्य उद्देश्य ईश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है।

बेवर के अनुसार :– मोक्ष का साधन भक्ति विदेशी प्रभाव की देन है भारतवर्ष में इसका प्रवेश ईसाई धर्म के साथ हुआ। आर्यलोग शिव और विष्णु की उपासना करते थे जो विदेशी प्रभाव की पुष्टि करना उपहास का विषय होगा।

कुछ विद्वान भक्ति का मुख्य स्रोत वेद नहीं, बल्कि सिंधु सभ्यता की शिव आराधना से मानते हैं हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में कुछ मूर्तियों के अवशेष मिलने के कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि उस युग में शिव तथा देवी की आराधना की जाती थी।

भक्तिकाल में भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के अनेक कारण को देखने को मिलती है जो इस प्रकार है–

1. भक्तिमार्ग की सरलता :– हिंदू धर्म का स्वरूप अत्यंत जटिल हो गया था, जिसके कारण मानसिक कर्मकांडों एवं पूजा–पाठ क्रियाओं को साधारण जनता सरलता से नहीं निभा सकती थी, अतः भक्तिमार्ग को अपनाने से भक्तों को अत्यंत सरल तथा जटिलता से राहत था। जो लोकप्रिय होता चला गया।

2. मुस्लिम आक्रमणकारी :– मध्यकाल में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हिंदू के पूजा स्थल एवं मूर्तियों को विनाश कर दिया था, ऐसी विकट स्थिति में भारतीय जनता स्वतंत्र रूप से मंदिरों में जाकर मूर्ति पूजा और उपासना नहीं कर सकते थे। अतः वह भक्ति एवं उपासना द्वारा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयास करने लगे।

3. जटिल वर्ण व्यवस्था :– मध्यकाल तक आते–आते भारत की जाति व्यवस्था बहुत जटिल हो गई थी जिसे उच्च जातियां अपने को श्रेष्ठ समझ कर निम्न जातियों पर अत्याचार करने लगे।

अंत में निम्न जाति के लोग असंतुष्ट होकर भक्ति मार्ग का सहारा लिया, जिससे निम्न वर्ग के व्यक्तियों के लिए भक्ति का द्वार खुल गया।

4. पराधीनता के परिणाम स्वरुप क्रियातत्व शक्ति की नियोजन की आवश्यकता :–भक्ति आन्दोलन के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण था मनुष्य एक कर्मयुक्त प्राणी है परन्तु पराधीनता में फंस जाने के कारण हिन्दू लोगों का कर्मप्रिय जीवन नष्ट हो गया था, जिससे हिन्दू भक्त ईश्वर के भजन की ओर जाने लगे।

5. समन्वय की भावना :– बहुत समय तक हिंदू और मुस्लिम साथ–साथ थे बाद में दोनों के बीच ईष्या, द्वेष तथा वैमनस्य शुरू हो गया। अंत में दोनों जातियों ने आपस में सद्भाव का जन्म अति आवश्यक समझा जिसके कारण भक्ति मार्ग का सहारा लिया।

भारतीय इतिहास में विभिन्न धार्मिक संतों एवं धर्म सुधारकों का भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान है, जिन्होंने समाज में धार्मिक सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण आंदोलन आरंभ किया। भक्ति को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने कई प्रकार के धार्मिक आंदोलन चलाया जिसमें भक्ति मार्ग को विशेष बल दिया गया। अतः मध्यकाल को भारत के इतिहास में भक्ति आंदोलन के नाम से जानते हैं।

मध्यकाल में इस्लाम धर्मावलंबी मुस्लिम धर्म प्रचारकों द्वारा अपना धर्म प्रचार के लिए हर प्रकार के पर्यटन किया जाता था जिसके कारण हिंदू भक्तों ने इस्लाम के बढ़ते प्रभाव से बचने के लिए धर्म सुधारक आंदोलन प्रारंम्भ किया। इस आंदोलन से धर्म एवं समाज में प्राचीन काल से चली आ रही कुरीतियों का अंत करने का प्रयास किया। भारत के समाज में व्यापक हो गई कुरीतियों एवं धार्मिक आडम्बर के विरुद्ध एवं भारतीय परिवेश में निगुर्ण धारावादी विचारों के व्यापक हस्तक्षेप हो रहे परिवर्तन की दृष्टि में रखते हुए बदलावकारी परिस्थितियों के उत्पन्न होने के कारण भक्ति मार्ग का सहारा लिया।

भारत में उस समय भक्ति आंदोलन का प्रारंभ हुआ जब हमारे देश की सभ्यता संस्कृति और धर्म विलीन होते जा रहा था। ऐसी स्थितियों में भारत के अनेक विद्वान, समाज सुधारक, कवि एवं संत–सूफियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन्हीं समाज सुधारकों के भक्ति आंदोलन में कबीर का एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसका उल्लेख हम इस प्रकार से कर सकते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में अन्य संत और कवियों की तरह कबीर का एक विशेष स्थान है।

संत कबीर का जन्म 1398 ई० में एक विधवा ब्राह्मणी के यहां हुआ था लोक लज्जा एवं कुल खानदान से बचने के लिए, नवजात शिशु कबीर को वाराणसी में लहरतारा के पास एक तालाब के समीप छोड़ दिया। एक जुलाहा नीरू एवं उसकी पत्नी नीमा उठा लाया और

उसका नाम कबीर रखा। अरबी भाषा में कबीर का अर्थ महान होता है। इस प्रकार से कबीर का प्रारंभिक जीवन एक मुस्लिम परिवार में गुजरा बाद में कबीर ने हिंदू–मुस्लिम से परे रखकर स्वयं को एक योगी कहा। कबीर की शिक्षा–दीक्षा किसी उच्च शैक्षणिक संस्था से नहीं हुई थी।

"मसि कागद छुयौ नही, कलम गहयौ नहीं हाथ।"

कबीर को मुस्लिम परिवार में जन्म लेकर वाराणसी के वातावरण में हिंदू धर्म, दर्शन तथा संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। कबीर आध्यात्मिक गुरु की खोज में अनेक हिंदुओं एवं मुसलमानों के पास गए, परंतु कोई भी उनकी इस तृष्णा को संतुष्ट नहीं कर सका। जिसके कारण कई स्थानों में भ्रमण करते रहे, अंत में किसी ने उनको रामानंद से मिलने का सुझाव दिया। रामानंद ने उसकी श्रद्धा भक्ति देखकर उसे अपना परम–प्रिय शिष्य बना लिया। कबीर अपने गुरु रामानंद से प्रभावित हुए। गुरु रामानंद ने उन्हें राम भक्ति का मंत्र दिया, जो हिंदू धर्म तथा दर्शन संबंधी शिक्षा थी। कबीर अपने विवेक अन्तर्ज्ञान तथा सारग्रही बुद्धि से अपनी विचारधारा की दार्शनिक अभिव्यक्ति की।

अनपढ़ कबीर का प्रभाव पढ़े लिखे व्यक्तियों से कहीं अधिक था। अतः सिकंदर लोदी ने उनके प्रभाव को स्वीकार कर लिया। उनकी भाषा में खड़ी बोली पूर्वी ब्रज राजस्थानी, पंजाबी, अरबी तथा फारसी आदि भाषाओं में शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

कबीर का जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ जब विश्व विषमताएं और नैराष्य विश्वासघात तथा नृशंसता अपना ढोल पीट–पीटकर हिंदुओं, के दुर्बलों के मन को भयभीत कर रहे थे। बाह्य आडंबरो, धर्म के ठेकेदार मठाधीश बनकर अनाचार का जीवन व्यतीत कर रहे थे हिंदू समाज में विषमताओं से तंग होकर निम्न जाति के लोग धर्म परिवर्तन पर उतारू हो गए थे। आर्थिक संकट के कारण सामान्य जनता की रीढ़ टूट चुकी थी। ऐसी परिस्थितियों को देखकर कबीर ने धर्म के क्षेत्र में एक क्रांति पैदा कर दी जिससे हिंदू के निम्न जाति के लोगों भक्ति मार्ग का सहारा लिया।

कबीर ने धार्मिक और नैतिक विचारों का निम्न प्रकार दर्शाया है, जो इस प्रकार से है
(A) धर्म की सहजता :– कबीर ने धर्म को साधारण रूप देने के लिए उसकी सहायता पर बल दिया। उन्होंने यह बताया कि जीवन के साथ धर्म साधना का कोई विरोध नहीं होना चाहिए। कबीर संन्यासियों के शिरोमणि होकर भी सहज बने रहें।

(B) कर्मयोग पर बाल :– कबीर ने धर्म को अकर्मण्यता से हटाकर कर्म योग की भूमि पर टिकाया था जो सहज बनकर साधारण के लिए ग्राहय बनाया।

(C) ब्राह्य आडंबरो का अवि वास :–कबीर ने हिन्दू धर्म के पूजा, उत्सव, वेद–पाठ, तीर्थयात्रा, व्रत, छुआछूत, अवतारोपासना तथा कर्मकाण्डों पर कसकर व्यंग्य किया। कबीर ने ब्राह्य आडम्बरों का संबंध सूर्य तथा अंधकार के समान माना जो दोनों एक साथ नहीं रह सकते हैं। कबीर के अनुसार यदि विचार शुद्ध एवं पवित्र नहीं है तो धर्म भी पवित्र नहीं हो सकता है। इसलिए उन्होंने हिन्दुओं के मूर्ति पूजा तथा नित्य स्थान आदि को व्यर्थ कहा है –

''पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली पीस खाय संसार।।''

''नहाये–धोये क्या भया जो मन का मैल न जाय।

मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय।।''

उन्होंने मुस्लमानों के नमाज पढ़ने के ढंग तथा हज यात्रा पर तीखा प्रहार किया–

''कांकर–पाथर जोरि कै मस्जिद लई चुनाय।

ता चढ़ि मुला बांग दे क्या बहरा भया खुदाय।।''

''सेष सबूरी बाहिरा, क्या हज काबे जाय।

जिनके दिल स्याबति नहीं, तिनकों कहाँ खुदाय।।''

(D) कबीर का समन्वयवादी दृष्टिकोण :– कबीर के युग में दो धर्मों, संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का संघर्ष था जिनके कारण कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच समानता का प्रतिपादन करते हुए दोनों को एकता के सूत्र में बांधना चाहते थे। ताराचंद के अनुसार :– ''प्रेम के ऐसे धर्म जो सभी धर्म एवं जातियों को संगठित कर दें, का प्रचार करना ही कबीर के जीवन का लक्ष्य था। कबीर ने दोनों धर्म के दोषों का निष्पक्ष आलोचना इस प्रकार की है–

''अरे इन दोउन राह न पाई।

हिन्दू अपनी करें बड़ाई गागर छुवन न देई।।

''मुसलमान के पीर औलिया मुर्गा–मुर्गी खाई।

हिन्दुन की हिन्दुवाई देखी, तुरकन की तुरकाई

कहैं कबीर सुनों भाई साधो कौन राह है जाई।।''

(E) भक्ति भावना :– कबीर ने भक्ति के मार्ग को कर्म मार्ग तथा ज्ञान मार्ग से श्रेष्ठ बताते हुए कहा है कि जबतक अराध्य के प्रति भक्ति भाव नहीं है तबतक जप, तप, संयम, स्नान, ध्यान, आदि सब व्यर्थ है।

झूठ जप तप झूठा ज्ञान।

रामनाम बिन झूठा ध्यान।।

कबीर का कहना है कि भक्तिसाधना में वेद, शास्त्र, ज्ञान, यज्ञ, तीर्थ, व्रत, तथा मूर्ति पूजा की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने यहां तक बताया कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए हमें न मंदिर की आवश्यकता थी और ना मस्जिद की और ना गिरजाघर की और ना ही किसी तीर्थ स्थान की आवश्यकता थी। हमें ज्ञान सद्व्यवहार एवं गुरु की कृपा से प्राप्त कर सकते हैं।

(F) गुरु की महता पर बल :– कबीर ने भक्ति में गुरु को विशेष महत्व दिया है उसने यह बताया कि दृष्टि से गुरु वह साधु हैं जिसे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त है।

''कबिरा ते नर अंध है गुरु को कहते और।

हरि रूठे गुरु ठौर है गुरु रूठे नहीं ठौर।।''

''गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाय।

बलिहारि गुरू आपने गोविंद दियो बताय।।

कबीर ने भक्तिकाल में दर्शन का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि मानव शरीर जिस तरह चलायमान है वह आत्मा है। कबीर ने परमब्रह्म को मूल तत्व की संज्ञा दी है। यही अद्वैत तत्व हैं उन्होंने बताया कि आत्मा सर्वव्यापी हैं, निराकार हैं और अनंत भी है।

कबीर एक महान समाज सुधारक थे। हिंदू समाज की जाति प्रथा, नारी वर्ग का नैतिक अवमूल्यन, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, उनके लिए सहानुभूति का विषय बन गया था। वे निम्न जातियों पर उच्च वर्ग का घोर अत्याचार शिक्षा के अभाव में जादू टोना, जीव हत्या, मांस भक्षण, प्राचीन काल से चली आ रही कुरीतियाँ आदि समाज की जड़े को खोखली कर रखी थीं उस पर प्रहार करते थें। कबीर ने सांप्रदायिकता के मूल को हिंदुओं के मंदिरों एवं मुसलमान के मस्जिदों में देखा और दोनों को खुले आम निंदा की। कबीर वर्गसंघर्ष के विरोधी थे, समाज के बीच शोषण शोषित का भेद मिटाकर साम्य स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने जाति प्रथा का विरोध करते हुए मानव जाति को एक दूसरे के समीप लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मध्य युग में समाज सुधारकों में कबीर का व्यक्तित्व और कार्य अप्रतिम था। वह एक भाव भक्ति नहीं वरन् समाज सुधारक तथा एक महान उच्च गुणों से संपन्न महामानव भी थे।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि कबीर एक महान संत थे। भक्तिकाल में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही। जिस समय भारतवर्ष में मुसलमान का शासन व्यवस्था था, उस समय पूरे भारतवर्ष में इस्लाम धर्म का प्रचार–प्रसार के कारण उस काल में भारत की सभ्यता संस्कृति और धर्म लुप्त होने के कगार में थे। ऐसी स्थिति में भारत के समाज एवं धार्मिक सुधारकों में अपने धर्म को बचाने के लिए एकमात्र रास्ता ईश्वर की भक्ति की भावना में लीन हो जाना था। भक्तिकाल के पहले हम देखते हैं तो पता चलता है कि उस काल में पूरे भारत में चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, उच्च नीच छुआछूत के कारण हिंदुओं के बीच एकता समाप्त होते जा रही थी। परिणामतः उस समय मुस्लिम शासको ने भारतीय हिंदू भक्तों को मुस्लिम बनाने के लिए पद और धन का लालच देकर अपनी ओर मिलने का प्रयास किया जा रहा था जिसके कारण भारत में अनेक संतों, योगियों, कवियों, और विद्वानों ने भक्ति का सहारा लेते हुए आंदोलन का शुरूआत किया जिससे भारत की सभ्यता, संस्कृति और धर्म को बचाने में अहम भूमिका रही।